M. A. (Final) Examination, 2001

HINDI

Paper V

आधुनिक काव्य

Time: 3 Hours] [Maximum Marks: 100

सभी प्रश्न करने है।

1. ''कामयानी'' में इतिहास व कल्पना का सुन्दर समन्वय है।'' कथन की उदाहरण सहित पुष्टि कीजिए। 15

अथवा

'साकेत' की नारी चेतना पर एक विस्तार से प्रकाश डालिये।

2. 'उर्वशी' की प्रेम-व्यजना पर विस्तार से प्रकाश डालिए। 15

अथवा

'' 'असाध्य वीणा' मिथक न होते हुए भी मिथक सरीखा प्रभाव छोडती है।'' कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

3. 'राम की शक्तिपूजा' के काव्य-सौष्ठव पर सौदाहरण प्रकाश डालिए। 15

अथवा

'राम की शक्तिपूजा' के काव्यरूप पर अपना अभिमत प्रकट कीजिए।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

4. गिरजा कुमार माथुर अथवा मुक्तिबोध की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

निम्नांकित विषयों में सें किन्ही **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए:
अ- 'नई कविता' में प्रतीक-योजना
ब- 'उर्वशी' का संवाद-सौष्ठव
स- 'कातायनी' का मनोवैज्ञानिक विवेचन
द- 'राम की शक्तिपूजा' में बिम्ब-विधान

5. निम्नलिखित अवतरणों में सें किन्ही **चार** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।: **4*10**

क- दु:ख की पिछली रजनी बीच,
विकसता सुख का नवल प्रभात।
एक परदा यह झाना नील,
छिपाये है जिसमें सुख गात।

ख- ज्योतिर्मय अस्त्र सकल बुझ बुझकर हुए क्षीण,
पा महानिलय एस तन में क्षण में हुए लीन;
लख शंकाकुल हो गए अतुल बल शेष-शयन,
खिंच गए दृगों में सीता के राममय नयन।

ग- निरख सखि ये खंजन आये,
फेरे उन मेरे ने नयन इधर मनभाये।
फैला उनके तन का आतप मन ने सर सरसाये,
घूमें वे इस ओर वहाँ, ये हंस यहाँ उड़ आये।
करके ध्यान आज इस जन का निश्चय वे मुस्काये,
फूल उठे है कमल उधर से बंधुक सुहाये।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

घ- देह प्रेम की जन्मभूमि है; पर उसके विचरण की
सारी लीलाभूमि नही सीमित है रूधिर त्वचा तक।
यह सीमा प्रसरित है मन को गहन गुद्वत लोकों में
जहाँ रूप की लिपि अरूप की छवि आंका करती है।

ड.- सहसा वीणा झनझना, उठी
संगीतकार की आँखों में ठंडी पिघली ज्वाला-सी झलक गई-
रोमांच एक बिजली-सा सबके तन में दौड़ गया
अवतरित हुआ संगीत
स्वयम्भू
जिसमें सोता है अंखड
ब्रह्मा का मौन
अशेष प्रभामय
डूबे गए सब एक साथ
सब अलग अलग एकाकी साथ

च- सबने अलग अलग संगीत सुना
इसकों
वह कृपस वाक्य था प्रभुओं का-
उसकों
आतंक मुक्ति का आश्वासन:
इसकों
वह भरी तिजोरी में सोने की खनक
उसे
बटुली में बहुत दिनों के बाद अन्न की सोंधी खुदबुद।
किसी एक को नयी वधू की सहसी सी पायल ध्वनि
किसी दूसरे को शिशु की किलकारी।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

छ- हर पराजय-जीत की
अंतिम कड़ी हो तुम।
जहाँ रूककर
फिर नयी मै टेक गढ़ता हूं,
भूमि पैरों के तले मेरे न हो फिर भी
हर नए संघर्ष के विष-श्रृंग चढ़ता हूं
क्योंकि अंतर में
अतल गहरे
आस्था के टूटते असहाय रथ के चक्र थामे।
नित खडी हो तुम।
अहं से बड़ी हो तुम।

ज- जलधि के फूटें कितने उत्स,
द्वीप कच्छप डूबें उतरायं।
किन्तु वह खड़ी रहे दृढ़ मूर्ति,
अभ्युदय का कर रही उपाय।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com